DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-6,
SOMATOFORM DISORDERS :CONVERSION HYSTERIA
LECTURE-56

रूपान्तर हिस्टीरिया (conversion hysteria)

हिस्टीरिया रोग को “हिपोक्रेटस” ने महिलाओ का रोग कहा जो गर्भाशय के शरीर में घूमने से होता है |गर्भाशय का घुमना महिलाओं में संतानोत्पादन की इच्छा या चाहत का परिणाम होता है |फ्रायड ने हिपोक्रेटस के उस सिद्धांत को अस्वीकृत किया और यह दिखलाया कि हिस्टीरिया का सम्बन्ध दमित मूलप्रवृत्तियों से है तथा ऐसे मूल प्रवृत्तियों को जान बुझ-कर दबाकर उसे छद्म रूप में अभिव्यक्ति करके किया जाता है | जैसे हिस्ट्रीकल व्याक्षोम(hysterical convulsion) अवैध लैंगिक

इच्छा का एक सांकेतिक अभिव्यक्ति (symbolic expression) हो सकता है तथा हिस्ट्रीकल पक्षाघात (hysterical paralysis) अवैध (forbidden) आक्रमक इच्छाओं के लिए आत्म दंड (self punishments) की अभिव्यक्ति हो सकती है |स्पष्टतः तब फ्रायड के अनुसार हिस्टीरिया का स्वरूप रूपान्तर होता है जिसमे मानसिक संघर्ष या तनाव आदि का दैहिक लक्षणों में रूपान्तर हो जाता है |

नैदानिक स्वरूप या लक्षण (clinical picture or symptoms)

मनोवैज्ञानिको एवं मनश्चिकित्सकों ने रूपान्तर हिस्टीरिया के नैदानिक स्वरूप को समझने के लिए उसके लक्षणों को निम्नांकित दो भागो में बाँटा है –

(1) संवेदी लक्षण (sensory symptoms)
(2) पेशीय लक्षण (motor symptoms)

इन दोनों लक्षणों का वर्णन निम्नांकित है –

(1) संवेदी लक्षण –रूपांतरित हिस्टीरिया में रोगी के संवेदी प्रक्रियाओं में कुछ विकृति आ जाती है |दूसरों शब्दों में ,इस रोग के रोगी के ज्ञानेन्द्रिय के कार्यो में कुछ विकृति

आ जाती है | इसे ही संवेदी लक्षण कहा जाता है | रूपांतरित हिस्टीरिया प्रमुख संवेदी लक्षण निम्नांकित है –

(i) एनेस्थेसिया (anesthesia)-इसमें रोगी के शरीर के किसी अंग से संवेदनशीलता (sensitivity) लुप्त होते दिखलाई पड़ती है |

(ii) हाइपेस्थेसिया (hypesthesia)-इसमें रोगी अपने शरीर से या शरीर के किसी अंग से आंशिक रूप से संवेदनशीलता लुप्त होते पाता है |

(iii) हाइपरस्थेसिया (hyperesthesia)-इसमें रोगी के शरीर में अतिसंवेदनशीलता पायी जाती है |

(iv) एनाग्लेसिया (analgesia)-इसमें रोगी के शरीर में दुःख या दर्द के प्रति कोई संवेदनशीलता नहीं पायी जाती है |

(v) पैरेस्थेसिया (paresthesia)-इसमें रोगी अपवदात्मक या असाधारण संवेदना जैसे किसी प्रकार की घंटी सुनने की संवेदना आदि का अनुभव करता है |रूपांतरित हिस्टीरिया के रोगी में इन प्रमुख संवेदी लक्षणों के अलावा कुछ और संवेदी लक्षण जो विशेषतः दृष्टि एवं

श्रवण से सम्बंधित है ,पाए गये है | जैसे आयरनसाइड तथा वैचलर (1945) ने द्वीतीय विश्व युद्ध के वायु सैनिकों के अध्ययन में दृष्टी संवेदन संबंधित इस रोग के अनेक लक्षण पाये जिसमे धुंधली दृष्टि ,प्रकाश की असहनीयता ,दोहरी दृष्टि ,किसी एक आँख से कम दिखलाई देना ,पढ़ते समय कुछ अक्षरों का एक साथ मिल जाना प्रमुख थे |

(2) पेशीय लक्षण –रूपांतरित हिस्टीरिया के रोगी के पेशीय अंगो के कार्यो में भी कुछ विकृतियाँ देखने को मिलते है जिन्हें विशेषज्ञों ने पेशीय लक्षण कहा है |पेशीय लक्षणों में हिस्टीरिकल पक्षाघात सबसे अधिक सामान्य है |हिस्टीरिकल पक्षाघात में रोगी के किसी एक पाँव या हाथ में पक्षाघात हो जाता है जिसके कारण उससे संबंधित शारीरिक क्रिया अवरुद्ध हो जाती है |कभी-कभी यह भी देखा गया है की हिस्टीरिकल पक्षाघात में पक्षाघात का संबंध किसी कार्यविशेषतक ही सीमित रहता है |जैसे संभव है की भोजन करते समय हाथ की मांशपेशियाँ न कार्य करे परन्तु अन्य कार्य ,जैसे लिखना

,बंदूक चलाना ,किसी वाद्ययंत्र बजाना आदि में मांसपेशियाँ किसी तरह की कोई शिथिलता न दिखलावे | पक्षाघात के अलावा स्नायविक प्रकम्पन (tremors),सिकुड़न या चलने –फिरने में झटका आदि भी प्रमुख है |इन सभी लक्षणों के अलावा रोगी में कभी-कभी हिस्टीरीकल ऐठन या आक्षेप भी देखने को मिलता है जो बहुत कुछ मिर्गी के दौरान में उत्पन्न ऐठन के सामान होता है |मिर्गी के सामान हिस्टीरीक आक्षेप में कभी-कभी रोगी मूर्छा के स्थिति में चला जाता है |

रूपांतरित हिस्टीरिया के रोगी में कई अन्य रोगों के लक्षण इतना स्पष्ट एवं मजबूत होते है की वास्तविक रोगी के लक्षणों से भिन्न करना साधारणतः संभव नहीं है| फिर भी विशेषज्ञों में वास्तविक रोग तथा रूपांतरित हिस्टीरिया के लक्षणों में अंतर किया जाता है | ऐसे माप दंड मुख्यतः निम्नलिखित है –

(i) रुपांतरित हिस्टीरिया का रोगी अपने शारीरिक लक्षणों के प्रति उदासीन रहता है तथा उसमे किसी तरह की चिंता नहीं होते देखी जाती है जबकि वास्तविक रोगी

का रोग अपने लक्षणों को देख-देख कर काफी चिंतित रहता है |इसे ला बेली उदासीनता कहा जाता है |

(ii) रूपांतरित हिस्टीरिया में शारीरिक रोग के लक्षण का स्वरूप चूँकि मिथ्या होता है ,इसलिए संबंधित शारीरिक अंग के कार्य क्षमता कुछ ख़ास-ख़ास मौके को छोड़कर बनी रहती है |परन्तु वास्तविक रोग में संबंधित शारीरिक अंग की कार्य क्षमता कुछ ख़ास-खास मौके को छोड़कर बनी रहती है |परन्तु वास्तविक रोग में संबंधित शारीरिक अंग की कार्य क्षमता समाप्त हो जाती है |

(iii) रूपांतरित हिस्टीरिया के रोगी का लक्षण-चयनात्मक होता है ,अर्थात शारीरिक विकृति के लक्षण उन्ही अंगो में दीख पड़ते है जो मानसिक संघर्ष का श्रोत होता है| जैसे ,हस्त मैथुन ,से उत्पन्न मानसिक संघर्ष को दूर करने में व्यक्ति के हाथ में पक्षाघात हो सकता है |वास्तविक रोग में ऐसी बात नहीं होती है और कोई अंग प्रभावित हो सकता है |

(iv) रूपांतरित हिस्टीरिया के रोगी के लक्षणों को सम्मोहन अथवा चेतना-शुन्यता की अवस्थाओं में मनश्चिकित्सक कम कर सकते है या दूर कर सकते है| परन्तु वास्तविक रोग के लक्षणों पर सम्मोहन अथवा चेतन –शुन्यता जैसी प्रक्रियाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है |